1st
ALL INDIA DRAMA FESTIVAL

प्रथम
अखिल भारतीय
नाट्य समारोह

श्री राम सेंटर सभागार, मंडी हाउस,

21-25 दिसंबर, 1992

आमुख

अपनी इन्द्रधनुषी गतिविधियों में नए क्षितिजों को समो लेने के लिए साहित्य कला परिषद सदा लालायित रहती है। रंगमंचीय गतिविधियों के क्षेत्र में अभी हाल ही में आयोजित क्षेत्रीय नाट्य समारोह की अनुगूँज तिरोहित भी नहीं हुई कि अब परिषद् एक और अभिनव कार्यक्रम लेकर प्रस्तुत है – "अखिल भारतीय नाट्य समारोह" । इसके द्वारा पहली बार यह अखिल भारत स्तर की श्रृंखला प्रारम्भ की गई है । परिषद के कार्यक्रमों के पीछे एक विशिष्ट सोच रहती है और यह नया कार्यक्रम भी इसका अपवाद नहीं । उद्देश्य है : देश के विस्तृत आंचल में बिखरी विभिन्न भाषाओं के समृद्ध रंगमंच की छवि राजधानी के नाटक प्रेमियों के सम्मुख प्रस्तुत करना । जहाँ इस वैविध्यपूर्ण रंगमंच परम्परा का आनंद-लाभ दिल्ली के दर्शक उठायेंगे, वहां प्रकारांतर से दिल्ली के रंगमंच को और अधिक फलने-फूलने में इससे मदद मिलेगी ।

हम वास्तव में आभारी हैं उन निर्देशकों एवं रंगकर्मियों के –जिन्होंने हमारे लघु सूचना पर दिए आमंत्रण को स्वीकारा और दिल्ली में अपनी प्रस्तुति मंचित करने की सहमति दी ।

साथ ही हम दिल्ली के अपने साथी रंगकर्मियों, नाटक प्रेमियों और प्रेस का आभार मानते हैं जिन्होंने हमें सदैव अपना सहयोग प्रदान किया है।

इस समूचे प्रयास के पीछे जिनका समर्थन और प्रेरणा है, वे हैं परिषद् के अध्यक्ष एवं दिल्ली के मुख्य सचिव **श्री आर. के. टक्कर** । हम उनके विशेष रूप से अनुग्रहीत हैं।

आइए अब इस नाट्य समारोह की प्रस्तुतियों का आनंद लें ।

सुरेन्द्र माथुर
सचिव

ON STAGE
(In order of Appearance)

DANCE OF DARKNESS	:	Guru Gopal Dubey
DHRITARASHTRA	:	Anil Dutt
GANDHARI	:	Rashi Marwaha
SANJAY	:	Ajay Jhingran
ASHWATHAMA	:	Virender Kumar
WIDOWS	:	Veena Dhir
	:	Sandeep Garcha
	:	Manjeet Kaur
PRAHARI (I)	:	Rajiv Bhatia
PRAHARI (II)	:	Hoshiar Singh
VIDUR	:	Shyam Lal
VYASA	:	Suresh Kumar
KRITVERMA	:	Sandeep Sharma
KRIPACHARYA	:	Mridul Suri
WOUNDED SOLDIER	:	Jang-Jin-ho/
	:	Shailendra Sodhi
YUUTSU	:	Rajeev Sharma
BALRAM	:	Sudhir Mahajan
CROW		Manjit Kaur
OWL	:	Sandeep Garcha

KATHA GAYAN

LEADER	:	Somesh
OTHER SINGERS		Sandeep Garcha
		Sandeep Sharma
		Veena Dhir,
		Manjit Kaur
		Rajeev Sharma,
		Rajiv Bhatia
		Mridul Suri
		Ajay Jhingran
OTHERS ON STAGE	:	Jang-jin-ho and
		Vijay Giri

BACK STAGE

CHOREOGRAPHY	:	Guru Gopal Dubey
COSTUMES	:	Anjala Maharishi
PROPERTIES	:	A.P.C. Arakel.
MAKE UP	:	Hwang-Gug-ja
LIGHTS	:	Rajiv Manchanda
SONG COMPOSITION	:	Hari Jigyasu
DRUMS		Deo Raj
STAGE MANAGEMENT	:	Jang-jin-Ho &
		Shailendra Sodhi
PRODUCTION	:	Shashi Sekhar
MANAGEMENT		

ASSISTANTS

COSTUMES	:	Veena Dhir
		Vijay Giri
PROPERTIES	:	Jang-jin-Ho
		Shayam Lal
		Vijay Giri
MAKE UP	:	Jang-Jin-Ho
		Vihay Giri
LIGHTS	:	Hoshiar Singh
		Rajiv Bhatia
SET EXECUTION	:	Vijay Giri & Ramu
PRINTING & PUBLICITY	:	Vijay Giri
DIRECTION		Prabhat Gupta

सोमवार
२१ दिसंबर

हिन्दी
चंडीगढ़

MAHABHARAT
महाभारत

(धर्मवीर भारती के सुप्रसिद्ध उपन्यास "अंधायुग" पर आधारित)

(Based on Dharmavir Bharati's well known play **"ANDHAYUG"**)

MAHABHARATA : the great epic created by sage VYASA is perhaps the most important human document surviving from antiquity. It celebrates Man's strength while dwelling on his perennial weaknesses and frailities. Every possible human dilemma has been included and translated in the epic in terms of situations which test man's ability to fight the immoral and negative which is both within and without him. No wonder that it continues to hold our imagination after thousands of years of its creation.

In India this epic has inspired, and continuously informed the very texture of life. But, at does not belong to a community or a religion or even a country. It has the capacity and power to sustain the entire human race in these most testing times.

Andha Yug (literally translated as the blind epoch) conceived by Dr. Dharamvir Bharati addresses to contemporary longings and anxieties, while depicting the last stage of the great battle fought betwen PANDAVAS and KAURAVAS.

Its unique theatricality and powerful verse and its profound understanding of the current anguish as well as of VYASA'S Mahabharata rang true in a strife torn world. The belief of the audiences was caught immediately.

Almost all important directors in India tried this play in different forms, styles and variety of spaces. It was done in regular theatres, in basements, in terraces, even in ancient forts and always generated lively controversies and debates among the theatre people and the press.

Presentation : Theatre Lab (Chandigarh)

प्रस्तुतिः थियेटर लैब (चंडीगढ़)

On Stage

CHORUS	SANJAY SHARMA
	BHUPINDER SINGH
	K.K. DANG/ARUN KUMAR GOUR
	SUDHAKAR KHAJURIA/AJAY
	KUMAR SAFA/ VANDHANA
	GUPTA/KAMALJET KOUR
	SUNITA ATTRI/RAHELA KAK
RAJA BALLI	GAIN DEV
BRISHPRVA	SHIV DEV SINGH
SHUKRACHARYA	J.R. SAGAR/SATIESH BAKSHI
DEVYANI	ANJU DULLO
SARMISHTA	GURMET KOUR
KAACH	UPINDER SHARMA
SENAPATI	MADAN RANGELA
CHAUNDLIK	RAJ KUMAR BHATT
YAYATI	DEVINDER NANDA

BACK STAGE

SCRIPT	NARSINGH DEV JAMWAL
PRODUCTION	
MANAGER	RATTAN KALSI
ASSISTANT	SHIV DEV SINGH/SUNITA PANDIT
SET EXECUTION	MADAN RANGELA
	DEVINDER NANDA
PROPERTY	M.P. SHARMA
	SHIV DEV SINGH
MAKE UP	GAIN DEV
	SUNITA ATTRI
LIGHT	MUSHTAQ
DANCE & COSTUMES	NARYAN PARSHAD
LEADING VOICE	BHUPINDER SINGH JAMWAL
ON REYTHEM	RAKESH KUMAR KONA
MUSIC	BHUPINDER SINGH JAMWAL
Design & Direction :	**MUSHTAQ KAK**
Playwright :	Narsingh Dev Jamwal
Music:	Bhupinder Singh Jamwal

मंगलवार
२२ दिसंबर

डोगरी
जम्मू

DEVYANI
देवयानी

(वैदिक कहानी देवयानी - शर्मिष्ठा पर आधारित)
(Based on Vedic Story **"Devyani - Sharmishtha"**)

डोगरी में प्रस्तुत नाटक 'देवयानी' प्राचीन भारतीय वैदिक साहित्य में उपलब्ध कहानी 'देवयानी-शर्मिष्ठा' का नाट्यान्तरण है । कथा के अनुसार देवयानी दैत्याचार्य शुक्र की मातृविहीन कन्या है, और शर्मिष्ठा दैत्यराज की पुत्री है । शुक्राचार्य के पास चूंकि मृत्यु-संजीवनी बूटी थी जिसको प्राप्त करने के लिए देवगण सदैव प्रयत्नशील रहते थे । एक बार देवताओं ने इस बूटी को प्राप्त करने का दायित्व कच्छ को सौंपा । कच्छ दैत्य-गुरू शुक्राचार्य के पास पहुँचता है । उसे देखकर देवयानी आसक्त हो जाती है । जब दैत्यों को कच्छ के आगमन का उद्देश्य मालूम होता है तो वे कच्छं की हत्या कर देते हैं । पुत्री देवयानी का दुःख आचार्य से नहीं देखा जाता तो वह कच्छ को संजीवनी के प्रयोग से जीवित कर देते हैं । ऐसा कई बार होता है। परिणामस्वरूप कच्छ संजीवनी को प्राप्त किये बिना ही देव-लोक लौट जाता है । देवयानी दैत्य-लोक में ही रह जाती है । उस पर असुरराज के सेनापति की कुदृष्टि थी जिसे भाँपकर राजकुमार ययाति देवयानी के सामने विवाह का प्रस्ताव रखता है । उसे यह शर्त स्वीकार करनी पड़ती है कि शर्मिष्ठा देवयानी की सहायिका के रूप में रहेगी । विवाह होता है । शुक्राचार्य तीर्थयात्रा पर निकल जाते हैं। कुछ समय बाद देवयानी दो पुत्रों की माता बनती है । इसी बीच ययाति और शर्मिष्ठा के बीच ही चुके गुप्त गन्धर्व-परिणय का रहस्य खुल जाता है । बेटी देवयानी के दुःख से क्रोधित शुक्राचार्य ययाति को नपुंसकता का श्राप दे बैठते हैं । परन्तु जब ययाति देवयानी को त्यागकर जाना चाहता है तो शुक्राचार्य ययाति से विनम्रतापूर्ण देवयानी को साथ ले जाने के लिए आग्रह करते हैं और शापमुक्त होने का आश्वासन देते हैं — और इसी के साथ नाटक का अन्त भी हो जाता है ।

देवयानी और शर्मिष्ठा से सम्बन्धित यह मिथक मानव जीवन में सदा से प्रतिबिम्बित होता रहा है, आज भी हो रहा है । इसके अतिरिक्त नाटक में प्रणय-सम्बन्धों, व्यवस्था, प्रथाओं और आस्थाओं का द्वन्द्व भी दृष्टव्य होता है । वर्तमान समाज में आस्था का जो संकट है, उससे यह नाटक 'देवयानी' एकदम सामयिक और प्रासंगिक हो जाता है विभिन्न पात्रों और उनके चारों और बुने गए कथानक को प्रस्तुत करने, उभारने के लिए निर्देशक ने मिथकीय, काव्यात्मक-गीतात्मक आदि तत्वों के सम्मिश्रण पर आधारित समग्र दृष्टिकोण को अपनाया है और नाटक के भावात्मक प्रसंगों में निहित संवेदनाओं के सम्प्रेषण हेतु सन्तुलित सांगीतिक सहयोग लिया है । निर्देशक का प्रयास है, मंचन में प्रयुक्त सारा प्रयोगवादी कर्म सूक्ष्म और कोमल रहे और नाटक के कथ्य और उसकी आत्मा से साक्षात्कार करा सकें।

प्रस्तुतिः एमैच्योर थियेटर ग्रुप (जम्मू)
Presentation : Amateur Theatre Group

On Stage

YERMA	:	RAMANJIT
JEEVAN	:	KULDEEP SHARMA
MITA	:	PAYAL CHOWDHRY
SHIVDEVI	:	GICK GREWAL
SARVAN	:	VINOD SHARMA
NARANGI	:	TARANJIT
DHOBANS	:	GICK GREWAL, PAYAL CHOWDHRY, TARANJIT, BAHADUR CHAND, AMBA.
SISTER-IN-LAWS	:	SOHAN LAL MADAN LAL
SINGERS	:	PAMELA SINGH, LAKSHWINDER
MUSICIANS	:	MEHAR CHAND, PREM CHAND, KHARATI RAM, BAGGA, MUNDRI LAL, KARAM CHAND

Off Stage

COSTUMES & SET DESIGN	:	NEELAM MAN SINGH CHOWDHRY
SETS EXCUTED BY	:	RAVINDER HAPPY, RAMESH BHARDWAJ
COSTUMES TAILORED BY	:	MOHAMMED HANIF KHAN
LIGHT DESIGN & EXECUTION	:	RAVINDER HAPPY
	:	HARJIT KAINTH
BACK STAGE	:	RAMESH BHARADWAJ, RAJESH CHANDER PRAKASH
PUNJABI PLAY-WRIGHT	:	SURJIT PATTAR
DIRECTION	:	NEELAM MAN SINGH CHOWDHRY
MUSIC	:	B.V. KARANTH

बुधवार
२३ दिसंबर

पंजाबी
चंडीगढ़

YERMA

यर्मा

(इटालवी लेखक एफ. जी. लोर्का के नाटक पर आधारित)

(Based on Italian playwright F.G. Lorca's play)

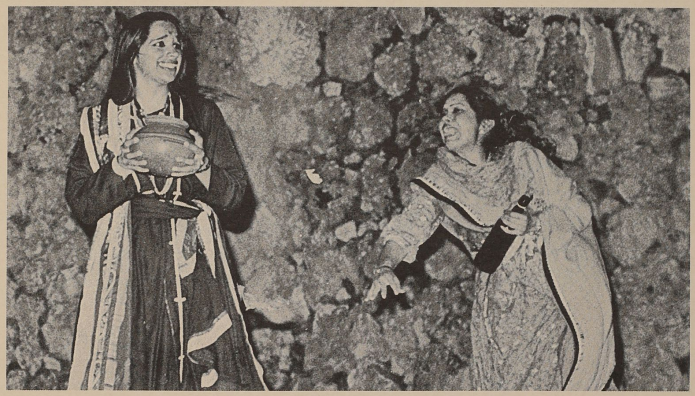

YERMA is the story of a woman living in an open, free society; earthy woman, pagan woman; gay; real. With no middle class inhibitions Yerma lives with her own personal moral code and when this code is confronted, she frees herself from the impediments that are destroying the life force within her.

प्रस्तुति "दि कंपनी" (चंडीगढ़)

Presentation "The Company" (Chandigarh)

मंच पर

मनु	:	अबरार हसन
श्रद्धा	:	शिवांगी पंवार
पशिष्ठ	:	उदय शहाणे
सुद्युम्न	:	सुधीर खानवलकर
सुमति	:	रश्मि चन्दवासकर
बुध	:	प्रवीण महुवाले
विद्याधर/दण्डनायक	:	वृजेश
चन्द्रिका (प्रार्थिनी)	:	अफरोज़
अपराधी	:	प्रभात श्रीवास्तव
प्रार्थी.१	:	असीम दुबे
प्रार्थी.२	:	अरूण दण्डवते
वृद्धा	:	निरूपमा वालिया
लड़की	:	मोहिनी पूँछवाले
मणिधर	:	कृष्णकुमार दीक्षित
धनराज	:	परसों नाथानी
बाल सुद्युम्न/पुरूरवा	:	जीशान/प्रतीक पंवार
इला	:	रूपाली वालिया

मंच परे

वस्त्र विन्यास	:	जयन्त देशमुत्र
मंच/आलोकन	:	जय पंवार
वार्डरोब	:	अनिल जैन
रूपसजा	:	फरीदवज्मी
गीत	:	गिरिजेश व्यास
संगीत	:	दिलीप महाशब्दे
संगीत मंडली	:	समरेन्द्रनटर्जी (वांसुरी) मेघा गोखले (गायन) वृजेश खजूरिया (ढोलक) डी. नाथन (मृदंग)
नृत्यगतियाँ	:	रूपाली वालिया
प्रचार	:	असीम दुबे
संयोजन	:	अबरार हसन
मंच व्यवस्थापक	:	वृजेश
नाट्यरचना	:	**डा. प्रभाकर श्रोत्रिय**
निर्देशन	:	**अशोक बुलानी**

वृहस्पतिवार
२४ दिसंबर

हिंदी
भोपाल

ILA
इला

श्रीमद्भागवत के नवम स्कन्ध की एक परम नाटकीय कथा के आधार पर डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय ने इला की रचना की है । वैवस्वत् मनु ने पुत्र प्राप्ति के लिए आचार्य वशिष्ठ से पुत्रकामेष्टि यज्ञ करवाया, परन्तु पत्नी श्रद्धा की इच्छा के अनुसार 'इला' नामक कन्या का जन्म हुआ । इससे क्रुद्ध हुए मनु के आग्रह पर वशिष्ठ ने पुत्री इला को पुत्र सुद्युम्न में बदल दिया । बाद में उसका विवाह सुमति से हुआ और तीन संतानें हुईं । एक बार संयोगवश सुद्युम्न उस वन में पहुंच गया, जहाँ पहुंचने पर शिव के शाप के कारण कोई भी पुरूष स्त्री बन जाता था । सुद्युम्न फिर इला हो गया । इला की भेंट तारा और चन्द्रमा के जारज पुत्र बुध से हुई । बुध की पत्नी के रूप में उसने पुरूरवा को जन्म दिया । उसे पनुः सुद्युम्न बनाने के लिए वशिष्ठ ने शिव से प्रार्थना की । अपने वचन में बँधे शंकर ने उसे एक माह पुरूष और एक माह स्त्री बनने का वरदान दिया ।

इस मिथकीय कथा का इस्तेमाल करते हुए नाटककार ने न केवल पुरूष, सत्ता और शक्ति के द्वारा स्त्री पर अनादिकाल से आज तक विविध रूपों और स्तरों पर किये जाने वाले अत्याचार एवम् अन्याय को चित्रित किया है, बल्कि निरन्तर कृति को विकृति में बदलने के भयानकतम परिणामों से आगाह किया है । यह विचार अपने आप में बेहूदा है कि आप प्रकृति का जैसा चाहें इस्तेमाल कर सकते हैं । इस प्रवृत्ति ने आज हमें यांत्रिक अमानवीकरण और स्टार वार के जिस दहाने पर खड़ा कर दिया है वह अत्यन्त भयानक है ।

आधुनिक समय में जीवन के हर स्तर पर जो अतिवाद, अधूरापन एकांगिता, असंतुलन और दोहरापन व्याप्त है, सत्य और तथ्य के बीच जो विसंगतियाँ उभरी हुई हैं, नाटक की समूची सर्जना इसका विरोध करती है । शासक का अहंकार, राजनीतिज्ञों की धूर्तता, वंशाधिकार और वंशाभिमान, बुद्धिजीवियों की कायरता, पुरूष का दंभ और स्त्री की विवशता-सभी हमारे समय की सचाइयाँ हैं।

नाटक में कथ्य के ये सारे स्तर समानान्तर और गुँथे हुए चलते हैं जिसमें मनोवैज्ञानिक , सामाजिक , सांस्कृतिक और जटिल मानवीय प्रश्न गहरे तनाव के साथ उभरते हैं । पूरा नाटक विद्रोह की धुरी पर खड़ा है, जिसमें हमारे समय की आग है , न चाहते हुए भी हम लगातार उसमें झुलस रहे हैं । नाटक खुद एब्सर्ड हुए बिना उस दुनियां को उजागार करता है जो इंच-दर-इंच एब्सर्ड है।

प्रस्तुति : रंग समूह (भोपाल)

Presentation : Rang Samooh (Bhopal)

ON STAGE

SUTRADHARA	: IBOMCHA SOROK
BHATT	: SOMORENDRO
KARNA	: IBOCHOUBA MEETEI
SALYA/PARSHURAMA/ INDRA	: R.K. BHOGEN
RADHA	: CHANDRAKALA
'KUNTI	: SHANTI
MATA	: SOBITA, IBEMHAL
DEVDOOT	: INACCHA
LANMEE	: ROBINDRO, SOMORENDRO, NINGTHEMBIR, NIMAI, IBOMCHA, SUBRATA

BACK STAGE

STAGE MANAGERS	: NIMAI, SUBRATA
STAGE PROPS	: SOMORENDRO, NIMAI, SUBRATA
COSTUME-IN-CHARGE	: IBOMCHA SOROK
ASSISTANT COSTUME-IN-CHARGE	: CHANDRAKALA, SHANTI, SOBITA
MUSIC ASSISTANTS	: KRISHNA, JUGESHWAR, INAOCHA, TOMBA, MUHEN, BIJAN, INGOBA, DHANACHANDRA, I BEMHAL
LIGHT ASSISTANT	: ACHOUBA SHARMA
CONSULTANTS	: OJAH BAGENDRA, OJAH IBOCHOUBA, OJAH KHELTON
SCRIPT	: BHASA
MANIPURI TRANSLATION	: A.KRISHNAMOHAN SHARMA
ADMINISTRATOR	: R.K. BHOGEN
ASSISTANT DIRECTOR	: IBOCHOUBA EETEI
DESIGN, MUSIC & DIRECTION	: **RATAN THIYAM**

शुक्रवार
२५ दिसंबर

मणिपुरी
इंफाल

KARNA BHARAM

कर्ण भारम्

(महाकवि भास के संस्कृत नाटक पर आधारित)

(Based on the great Sanskrit playwright Bhasa's Sanskrit drama)

The play, based on Mahakavi Bhasa's Sanskrit drama, is a direct approach towards the identity crisis of an individual in the modern world. Modern civilisation's dehumanising influences in human society are crystallised through the agonies and travails faced by Karna, who was a victim of class and caste discriminations- the evils that beset the modern society, putting heavy impediments on the growth of an individual.

Karna while moving into the battle-field is saddened by the thought that he would be battling his own brothers against the promise that he had made to his mother. He confesses his real identity to Shalya, his charioteer, through flash back, the episode of his birth, when the sun-god meets his unwed mother Kunti, who for fear of society forsakes him, is shown.

Then again through flash back the episode of how Parashuram cursed him, that the weapons and their technique that he had learnt from the sage would fail him in his hour of need, is depicted. Karna, a Kshstriya by birth, learnt under the feet of Parashuram under the concealed identity as a Brahmin disciple.

Another gripping episode shows how Karna gives away his invincible "Kawach and Kundala" to Indra, who begs him in the guise of a Brahmin.

Thus bereft of his Kawacha and Kundala and the curse of Parashuram he orders Shalya to drive him to where Arjuna is.

प्रस्तुति : कोरस रिर्पटरी थियेटर (इंफाल)

Presentation : Chorus Repertory Theatre (Imphal)